खुदाबादी सोनारा एसोसिएशन, जयपुर का संक्षिप्त इतिहास

भारत के विभाजन के बाद हमारे खुदाबादी सोनारा समुदाय के अधिकांश परिवार जयपुर में बस गये। राजस्थान सरकार के शहरी सुधार ट्रस्ट (यू.आई.टी) जयपुर शहर के बाहरी इलाकों को विकसित करने में रूचि रखती थी। 1952 के आसपास, सिंधी सहकारी हाऊसिंग सोसायटी का गठन स्व. श्री बनाराम की अध्यक्षता में किया गया, जिन्होंने आवास विकास के लिए टी.बी. सेनेटोरियम अस्पताल के पास बनीपार्क में यू.आई.टी. से खाली भूमि का एक बड़ा क्षेत्र मुफ्त में प्राप्त किया था, ताकि सिंधियों के लिए दो/तीन वर्षो के भीतर आवासीय मकान बनाए जा सके। जयपुर में रहने वाले कई सिंधियों की तरह, खुदाबादी सोनारा समुदाय के 150 परिवार सोसायटी के शेयर होल्डर (100 रुपये प्रति शेयर) बन गए। प्रत्येक शेयरधारक को दो साल के भीतर अपने आवासीय मकान विकसित करने की शर्त के तहत लगभग 500 वर्गगज भूमि का एक भूखण्ड़ आवंटित किया गया था। प्रत्येक शेयर होल्डर/भूखण्ड़ आवंटी को रुपये देने का वादा किया गया था। निर्माण के चरणों में उन्हें 3400/- रुपये (विकास शुल्क के लिए 600/- रुपये से कम) का भुगतान ऋण के रुपये में किया जाएगा, जिसे बीस वर्षो तक प्रतिमाह 20/- रुपये की अदागयी में वापिस किया जाएगा। व्यक्तिगत धन की कमी के कारण, हमारे समुदाय के केवल कुछ परिवार ही अपने आवासीय घर बनाने में सक्षम थे। सोसायटी ने दो साल के भीतर आवासीय मकानों का निर्माण न करने पर भूखण्ड़ का आवंटन रद्द करने की धमकी दी। खुदाबादी सोनारा एसोसिएशन की स्थापना 11 अप्रैल, 1958 को **श्री टीकमदास भोजराज पुरसवानी** की अध्यक्षता में बनीपार्क, जयपुर के दूरदर्शी खुदाबादी सोनारा प्लॉट मालिकों के एक समूह द्वारा की गई ताकि सदस्यों के हितो की रक्षा करना और उनकी समस्याओं का समाधान करना। वे सभी खुदाबादी सोनारा जिनके पास बनीपार्क में अपने भूखण्ड़ या फ्लैट थे, इसके सदस्य बन गए।

27 सितम्बर, 1959 को प्लॉट नम्बर 72-73 पर एक आमसभा की बैठक **स्व. श्री भोजराज रतुमल सावलानी** की अध्यक्षता में आयोजित की गई, जिसमें 21 (इक्कीस) सदस्य उपस्थित थे और जिसमें उन्होंने घोषणा की थी वह प्लाट नम्बर 39, जो काफी समय पहले उन्होंने मंगूमल किमतराय गनवानी से खरीद किया था, स्वेच्छा से एसोसिएशन को दान कर दिया। इसके अलावा, उसी बैठक में, एसोसिएशन का नाम "**खुदाबादी सोनारा एसोसिएशन**" की औपचारिक रूप से पुष्टि की गई। एसोसिएशन का गठन निम्नलिखित लक्ष्यों और उद्देश्यों को ध्यान में रखते हुए किया गया।

लक्ष्य एवं उद्देश्य :

01. अपने अधिकारों और वैध हितों की रक्षा के लिए सदस्यों को एकजुट करना और उनका प्रतिनिधित्व करना।

02. खुदाबादी सोनारा समुदाय के सभी संगठनों की गतिविधियों में सक्रिय रूप से भाग लेना।

03. सामान्य रूप से गैर सोनारा समुदाय और विशेष रूप से बनीपार्क के लोगों का संगठन के साथ सौहार्द संबंध बनाए रखना।

04. सिंधी कला, संस्कृति, साहित्य, भाषा और कल्याणकारी गतिविधियों में विकास और उत्थान को प्रोत्साहित करना।

05. समग्र रूप से समुदाय के सदस्यों के लाभ के लिए विशेष रूप से उपरोक्त उद्देश्यों और अन्य उद्देश्यों को प्राप्त करने के लिए आवश्यक सभी प्रयत्न करना।

21 अक्टूबर, 1960 को प्लॉट नम्बर 39 पर ''भूमि-पूजन'' के बाद, स्व. श्री भोजराज रतुमल सावलानी ने घोषणा की सोसायटी ऋण के 3,400/- रुपये और प्लॉट नंबर 39 की अतिरिक्त भूमि की लागत, कुल 4363/- रुपये उनकी व्यक्तिगत सम्पत्ति के सरकारी बांड के साथ दो कमरों के निर्माण की राशि को उनका व्यक्तिगत दान माना जाना चाहिये। इस समारोह के साथ, हमारे समुदाय का हैदराबाद, सिंध में आयोजित एक विवाह हॉल के लिए अपनी जगह का सपना वास्तविक बन गया। विभाजन के बाद बड़ी संख्या में हमारे समुदाय के सदस्य जयपुर में बस गए और एक इमारत का मालिक होना हमारे समुदाय के लिए खुशी और गर्व की बात थी। खुदाबादी सोनारा एसोसिएशन, जयपुर ने 21 अक्टूबर को स्व. श्री ठाकुरदास तीर्थदास हिंगोरानी की अध्यक्षता में आयोजित आम सभा की बैठक में सम्पत्ति की हर तरह से देखभाल करने के लिए **''खुदाबादी सोनारा एसोसिएशन ट्रस्ट''** के नाम से एक ट्रस्ट स्थापित करने का संकल्प लिया। 1960 में अधिवक्ता स्व. श्री सिरूमल इसरानी से परामर्श कर, 24 जनवरी 1950 के अध्यादेश संख्या 4 के तहत राजस्थान राज्य में अपनाए गए भारतीय पंजीकरण अधिनियम एक्ट 1908 की धारा 51 के तहत 18 नवम्बर 1965 को ट्रस्ट डीड का पंजीकरण किया गया।

ट्रस्ट की सदस्यता के लिए निम्नलिखित ट्रस्टी चुने गए :

1. श्री ठाकुरदास तीर्थदास हिंगोरानी, अध्यक्ष
2. श्री वेंसीमल खूबचंद सावलानी, ट्रस्टी
3. श्री परमानंद मेंघराज सावलानी, ट्रस्टी
4. श्री चंचलदास केशवदास हिंगोरानी, ट्रस्टी
5. श्री गोबिंदराम झामनदास पुरसवानी, ट्रस्टी

मौके पर स्पष्ट रूप से यह स्पष्ट किया गया कि ट्रस्ट डीड में निहित नियमों और शर्तों के अनुसार स्वतंत्र रूप से कार्य करेगा और एसोसिएशन ट्रस्ट के मामलों में हस्तक्षेप नहीं करेगा।

श्रीमती सावित्री देवी ताराचंद सावलानी ने अपने **पति स्व. श्री ताराचंद शेवाराम सावलानी** की स्मृति में एक विवाह भवन के निर्माण के लिए बिना किसी नियम और शर्त के स्वैच्छिक योगदान दिया और **''दुर्गामाता मंदिर''** सहित कुछ कमरों का निर्माण 1966 के अंत तक पूरा हो गया। हमारे समुदाय के बहुत से सदस्य आगे आये और विवाह हॉल के निर्माण में कई तरह की सहायता की और इसे वर्ष 1969 मे पूरा किया। वर्तमान में, हॉल बहुत अच्छी तरह से सजाया गया है और एयर कूलिंग सिस्टम से सुसज्जित है और **''श्री ताराचंद शेवाराम सावलानी विवाह-हॉल''** के प्रसिद्ध रुप में जाना जाता है।

27 अप्रैल, 1969 को एसोसिएशन की प्रबन्ध समिति ने ट्रस्ट की परामर्श से निर्धारित नियमों व शर्तो के अनुसार खुदाबादी सोनारा सिंधवर्क सोसायटी (रजि.), जयपुर को एक कमरा और खुदाबादी सोनारा नवजवान मंडल को उनकी गतिविधियों के लिए एक कमरा आवंटित किया गया। तब से, एसोसिएशन के सहयोग से ट्रस्ट ने प्लॉट नम्बर 39 को एक विशाल परिसर के रूप में विकसित किया गया है, जिसे **''खुदाबादी सोनारा सामुदायिक केन्द्र''** के नाम से जाना जाता है।

कार्यालय धारकों का औपचारिक चुनाव होने तक निम्नलिखित हस्तियों ने एसोसिएशन की आम सभा की बैठकों की अध्यक्षता की है ।

श्री टीकमदास भोजराज पुरसवानी (08.04.1958 से 27.09.1959 तक)

श्री भोजराज रतुमल सावलानी (27.09.1959 से 14.02.1960 तक)

माननीय न्यायमूर्ति आई.एस. इसरानी ने ट्रस्ट के संस्थापक अध्यक्ष और खुदाबादी सोनारा एसोसिएशन के अध्यक्ष स्व. श्री ठाकुरदास तीर्थदास हिंगोरानी की प्रतिमा का अनावरण 18 दिसम्बर, 1993 को श्री ताराचंद झामनदास तनवानी की अध्यक्षता में बहुत धूमधाम से किया।

ट्रस्ट ने पहली बार दीपावली के अवसर पर श्री गंगाराम शामदास पुरसवानी की अध्यक्षता में एक गेट-टुगेदर का आयोजन किया, जिसमें खुदाबादी सोनारा समुदाय के सभी सगठनों की उप-समितियों सहित प्रबन्ध समितियों के साथ-साथ वित्तीय योगदानकर्त्ता भी शामिल हुए। ट्रस्ट के बुनियादी ढ़ाचे के विकास के लिए रविवार, 25 नवम्बर 2001 को आमंत्रित एवं सम्मानित किया गया।

ट्रस्ट ने श्री गोप रामचंदानी की अध्यक्षता में रंगारंग सांस्कृतिक नृत्यों के साथ अपनी स्वर्ण जयंती मनाई, जिसमें दानदाताओं, खुदाबादी सोनारा समुदाय के सभी संगठनों के प्रमुखो और ट्रस्ट के बुनियादी ढांचे के विकास के लिए वित्तीय योगदान कर्त्ताओं को आमंत्रित किया गया और शुक्रवार, 25 सितम्बर को सम्मानित किया गया एवं शनिवार, 26 सितम्बर 2015 को एक रंगीन स्मारिका का विमोचन किया गया।

महान सामुदायिक दूरदर्शी स्व. श्री भोजराज रतुमल सावलानी की प्रतिमा का अनावरण ट्रस्ट परिसर में हमारे समुदाय के दिग्गजों को सम्मान और श्रद्धांजलि देने के लिए त्यौहारों के एक भव्य उत्सव के दौरान मुख्य अतिथि श्री मोहन कुंदनदास सोनी, श्री नंदलाल सेऊमल पहलवानी की अध्यक्षता में किया गया। इस शुभ, यादगार और ऐतिहासिक घटना की स्मृति में एक आकर्षक और रंगीन स्मारिका **''कम्यूनिटी लीजेंड एक्सीलेंस फेस्ट 2016''** भी जारी की गई।

11 जनवरी, 2020 को **''प्रशस्ति समारोह - आनंदोत्सव 2020''** उन दानदाताओं के सम्मान में मनाया गया, जिन्होंने **''खुदाबादी सोनारा सामुदायिक केन्द्र''** एवं **''श्री ताराचंद शेवाराम सावलानी विवाह-हॉल''** के नवीनीकरण में स्वेच्छा से योगदान दिया है, जिसमें सांस्कृतिक कार्यक्रम के साथ-साथ प्रदर्शन और संगीत-ए-बहार की शाम, श्री गंगाराम शामदास पुरसवानी की अध्यक्षता में मनाया गया। मुख्य अतिथि श्री टोपनदास एच. झामनानी ने इस शुभ, यादगार और ऐतिहासिक पर्व की स्मृति में एक आकर्षक और रंगीन स्मारिका जारी की।

संयोग से **''श्री ताराचंद शेवाराम मैरिज हॉल''** ने भी अपने निर्माण की स्वर्ण जयंती पूरी कर ली है (इसका निर्माण 1969 के दौरान पूरा हुआ था और अभी वर्ष 2019 है), हम श्रीमती सावित्री देवी ताराचंद सावलानी को उनके विवाह भवन के निर्माण में योगदान देने के लिए सम्मानित करते है।

खुदाबादी सोनारा नवजवान मंडल समिति, जयपुर का संक्षिप्त इतिहास

खुदाबादी सोनारा नवजवान मंडल की स्थापना स्व. श्री लधाराम पहिलवानी, स्व. श्री गंगाराम किमतराय गनवानी, स्व. श्री भवनदास मेंघराज वसनानी और स्व. श्री पोहुमल हसराजानी द्वारा वर्ष 1935 में हैदराबाद, सिंध, (अब पाकिस्तान) में की गई थी, जिसका मुख्य उद्देश्य पुराने रीति-रिवाजों में सुधार कर विभिन्न परम्पराओं एवं महान सामुदायिक सेवाएं प्रदान करना था। वर्ष 1951 में मंडल को इसी मिशन के साथ जयपुर में फिर से सक्रिय किया गया और समुदाय के युवाओं के बीच प्रेम और भाईचारे के बंधन को मजबूत करना।

विशेष रूप से खुदाबादी सोनारा समुदाय और सामान्य रूप से अन्य सभी समुदायों के विवाह और अन्य समारोह में बर्तन, क्राकरी, कटलरी, बिस्तर और अन्य सभी आवश्यक वस्तुओं की व्यवस्था करना और प्रदान करना था। आज मंडल के पास बडे स्टॉक में उपरोक्त वस्तुएं है और यह समुदाय के सामाजिक और धार्मिक कार्यो को सबसे सस्ते दामों पर उपलब्ध कराता है। सबसे पहले मंडल को खाना पकाने और परोसने के स्टॉक का भंडारा करने के लिए नवाब की हवेली, विद्याधर का रास्ता में खुदाबादी सोनारा नवजवान मंडल के एक कमरा आवंटित किया गया था, बाद में (1970 के दशक के दौरान) इसे खुदाबादी सोनारा सामुदायिक केन्द्र, प्लॉट नम्बर 39, सिंधी कॉलोनी, बनीपार्क, जयपुर - 302016 में स्थानान्तरित कर दिया गया।

मंडल को 6 जनवरी, 2005 को पंजीकरण संख्या 597/2004-05 के साथ **"खुदाबादी सोनारा नवजवान मंडल समिति, जयपुर"** के रूप में पंजीकृत किया गया था। मंडल का संचालन अध्यक्ष सहित पांच निर्वाचित सदस्यों और अध्यक्ष द्वारा नामित छह सदस्यों द्वारा किया जाता है। मंडल ने वर्ष 1960 में श्री चंचलदास ईश्वदास हिंगोरानी की अध्यक्षता में अपनी रजत जयंती और दिनांक 21.07.1985 को श्री जीवतराम ऋतुमल वसनानी की अध्यक्षता में स्वर्ण जयंती मनाई। हीरक जयंती शुक्रवार, 24 अप्रैल, 2011 को श्री पीताम्बरदास पी. खानचंदानी की अध्यक्षता में आयोजित की गई। इस अवसर को यादगार बनाने के लिए एक स्मारिका जारी की गई।

पूज खुदाबादी सोनारा पंचायत (रजि.), जयपुर का संक्षिप्त इतिहास

भारत में सम्पर्ण हिन्दू समुदाय अपने आध्यात्मिक, सांस्कृतिक उपयोगों के लिए अपने व्यक्तिगत रीति-रिवाजों और नैतिकता के आधार पर कई गुना सामाजिक समूह में विभाजित है। अधिकाशंतः भारत युगों से दूर दराज के गांवों में रहा है जहां शासकों का नियन्त्रण सामाजिक मामलों, आचरण के नियमों और विभिन्न समूहों के व्यक्तिगत सदस्यों द्वारा स्थापित प्रथाओं के संरक्षण को सुनिश्चित करने के लिए नहीं पहुंच सकता था। इसलिए समूहों के सदस्यों की सहमति से स्वैच्छिक संस्थाओं की स्थापना करना आवश्यक हो जाता है जो इन शक्तियों का प्रयोग करने के उत्तरदायित्वों को निभा सकते है। ऐसी संस्थाएं युगों से पूरे भारत में स्थापित की गई है और इन्हें **पंचायतों** का नाम दिया गया है। ये पंचायतें आज भी अपने-अपने समूहों के सामाजिक आचरण मे महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। एक पंचायत के मुख्य और प्राथमिक कार्यो, जिम्मेदारियों, कर्त्तव्यों और शक्तियों का प्रयोग यह देखना है कि सदस्य परम्पराओं को बनाए रखने के लिए सामाजिक, नैतिक, आध्यात्मिक, सांस्कृतिक आचरण और स्थापित प्रथाओं का पालन करते हैं। आमतौर पर

समूहों की सांस्कृतिक विरासत की रक्षा करना और बड़े पैमाने पर सदस्यों के बीच परेशानी और [illegible] भीतर या बीच कलह को रोकना ताकि वे परिवार सुखी जीवन जी सके। पंचायतों के द्वितीयक [illegible] जरूरतमंद सदस्यों को आर्थिक सहायता प्रदान करना शामिल हो सकता है।

पूज खुदाबादी सोनारा पंचायत 300 वर्ष से भी अधिक पुरानी अति प्राचीन संस्था है। पहले, पूज [illegible] को '**आदि-पंचायत**' के रूप में जाना जाता था और एक मुखी के नेतृत्व में होता था। इसका [illegible] खुदाबादी सोनारा पंचायत रखा गया, जब समुदाय 1800 ईस्वी के आसपास हैदराबाद सिन्ध में [illegible] हो गया। उन्होंने 14 दिसम्बर, 1930 से बैठकों का लिखित रिकार्ड रखना शुरू कर दिया। पूज [illegible] नेतृत्व 1951 तक एक मुखी द्वारा किया जाता था। जब ऐतिहासिक परिवर्तनों के माध्यम से, [illegible] झामनदास पुरस्वानी (31 वर्ष की आयु में) ने स्व. मुखी श्री बसरमल हासोमल हिंगोरानी से लोकतांत्रिक [illegible] से निर्वाचित अध्यक्ष के रूप में पदभार संभाला। पूज खुदाबादी सोनारा पंचायत डां. उधाराम जे. [illegible] अध्यक्षता में अपनी सभी प्रबन्ध समिति की बैठके, आमसभा की बैठके, विभिन्न सामुदायिक [illegible] और सामाजिक समारोह पंचायत हॉल, नवाब की हवेली, विद्याधर का रास्ता, जयपुर में करते थे। [illegible] परम्परा तब भी जारी रही जब बाद के अध्यक्ष सत्ता में आए।

अंत में, पूज खुदाबादी सोनारा पंचायत 19 जुलाई, 1974 को एक पंजीकृत निकाय बन गई [illegible] 71/1974-75) और इसका पंजीकृत कार्यालय खुदाबादी सोनारा कम्यूनिटी सेंटर, प्लॉट नम्बर 39, [illegible] कॉलोनी, बनीपार्क, जयपुर। पूज खुदाबादी सोनारा पंचायत का संचालन प्रबन्ध समिति द्वारा किया जा [illegible] है। संयुक्त दान समिति, सहायता समिति, कन्या शादी निधि समिति एवं बाल विद्या कोष समिति के [illegible] से सभी प्रकार की आर्थिक सहायता, धर्मार्थ एवं सांस्कृतिक गतिविधियां संचालित की जा रही है।

1947 के दुर्भाग्यपूर्ण विभाजन के बाद, खुदाबादी सोनारा समुदाय के सदस्य भारत के विभिन्न [illegible] चले गए। लगभग 3000 परिवारों में से लगभग 700 परिवार अब जयपुर में रहते है और ये सभी पूज खुदाबादी सोनारा पंचायत (रजि.), जयपुर के सदस्य है। हमारे समुदाय के सदस्य शान्तिपूर्ण, मेहनती, मेहमान-नवाज और खुले विचारों वाले है। उन्होंने विदेशों में भारतीयों की समृद्ध लोगों के रुप में छवि बनाई है। हमारे समुदाय के 90 प्रतिशत परिवारों का कम से कम एक व्यक्ति विदेश में रहता है। हमारे समुदाय के सदस्य [illegible] दृष्टिकोण में महानगरीय है और जाति, पंथ और धर्म के बंधनों से मुक्त है हमारे मंदिरों में श्री राम, [illegible] भगवान शिव, झूलेलाल और गुरूनानक के साथ शक्ति दुर्गा माता की पूजा की जाती है।

पूज पंचायत ने 8 सितम्बर 1974 को जयपुर में भारत के अन्य शहरों से अपने सह पंचायतों को [illegible] किया और **अखिल भारतीय खुदाबादी सोनारा पंचायत** का गठन किया। श्री पुरूषोतमदास [illegible]

गुरबानी इसके अध्यक्ष चुने गए। पूज पंचायत ने दिनांक 30/07/1977 को श्री फतुमल लालचंद वसनानी की अध्यक्षता में अपनी रजत जयंती (1951-1976) तथा दिनांक 04/11/2005 से 08/11/2005 तक श्री गंगाराम शामदास पुरसवानी की अध्यक्षता में हीरक जंयती (1930-2005) मनाई। इस अवसर को चिह्नित करने के लिए एक स्मारिका और न केवल खुदाबादी सोनारा समुदाय की गरिमा बल्कि जयपुर के कई अन्य सिन्धी समुदाय संगठनों की गरिमा का सम्मान किया गया और सिन्धी कॉलोनी, बनीपार्क, जयपुर में **'खुदाबादी सोनारा मार्ग'** का उद्घाटन किया गया। पहले स्व. श्री नारायणदास गागुमल रामनानी ने बड़ौदा (गुजरात) से **'जोग-माया'** नामक एक समाचार पत्रिका प्रकाशित और प्रसारित किया था और बाद में स्व. श्री अशोक गंगाराम पुरस्वानी ने मुंबई (महाराष्ट्र) से **'दुर्गा'** नामक समाचर पत्रिका प्रकाशित व प्रसारित किया गया।

पूज खुदाबादी सोनारा पंचायत के प्रयासो से वर्ष 1966 में सिन्धी स्वर्णकार एसोसिएशन, जयपुर का गठन सोने के आभूषण बनाने के लिए एक समान टैरिफ स्थापित करने के लिए किया गया था। जयपुर के सभी सिन्धी स्वर्णकार इसके सदस्य थे। खुदाबादी सोनारा समुदाय के श्री मंघाराम फतुमल वसनानी इसके पहले अध्यक्ष बने। सिन्धी स्वर्णकार संघ ने स्वर्ण नियन्त्रण अधिनियम, 1962 के प्रतिकूल प्रभाव का सरकार से लडाई लड़ी। संघ ने सरकार से **राम नगर (शास्त्री नगर)**, जयपुर में खाली जमीन के एक बडे टुकडे का आवंटन कराया, जिसे स्वर्णकार कॉलोनी के नाम से जाना जाता है जिसमें प्रत्येक सदस्य को 200 वर्गगज का प्लॉट निःशुल्क आंवटित कराया गया।

अतुल्य! खुदाबादी सोनारा समाज का भारतीय स्वतंत्रता संग्राम एवं समाज सेवा में अमूल्य योग्यदान

1910 में आचार्य कृपलानी एवं डॉ. चोइथराम ने हैदराबाद सिंध में ब्रह्मचार्य आश्रम की स्थापना की एवं उसके तुरंत पश्चात् हिन्दू महासभा व आर्य समाज की शाखाऐं भी जगह-जगह स्थापित हुई जो आगे चलकर स्वतंत्रता संग्राम की कर्म भूमि बन गई और हमारे समाज के कई युवा इस कर्म भूमि जे जुड़ गये जैसे कि श्री भोजराज रतूमल सावलानी, श्री ईसरदास कोडूमल हसराजानी, श्री गेहीमल बगोमल वसनानी, श्री टीकमदास भोजराज पुरसवानी, श्री तीर्थदास लेखराज कपूर, श्री लधाराम हेमनदास पहलवानी, श्री बूलचन्द मोटूमल गुरबानी, श्री वेरोमल डोलूमल वसनानी, श्री पहिलाज राय झमटमल गुरनानी, श्री नन्दीराम रीझूमल रामचन्दानी। उपरोक्त सभी युवा मिलकर **सोनारा युवा सेना** के नाम से प्रचलित हुए।

अप्रेल 1920 में जब बाल गंगाधर तिलक स्वतंत्रता संग्राम के दौरे पर हैदराबाद सिंध आए तब हमारे

सोनारा युवा सेना ने स्वयं रथ सजा कर उनकी सवारी हैदराबाद में निकाली व उस रथ को खुद खींचा, तत्पश्चात 1 **अगस्त**, 1920 को श्री बाल गंगाधर तिलक का बीमारी की वजह से निधन हो गया। उनके शोक में श्री जैरामदास दौलतराम व अन्य नेताओं के साथ हमारे युवा सेना ने भी सिर मुंडवाए। 17 नवंबर 1921 में प्रिंस ऑफ वेल्स का जब कराची में आगमन हुआ तब उनके विरोध में हैदराबाद बन्द का आयोजन सोनारा युवा सेना ने करवाया जो पूरी तरह सफल रहा। कराची में बाम्बों का जखीरा पकड़ा गया था जिसके इल्जाम में शंकराचार्य पूरी, श्री भारती कृष्ण तीर्थ, मौलाना मोहम्मद अली व मौलाना शौकत अली को गिरफ्तार खलीदिना हाल में मुकदमा 26/11/1921 से 4/11/1922 तक चला जिसके विरोध में भी हमारे युवा सेना ने सड़को पर विरोध प्रकट किया व आंदोलन किये। उपरोक्त मुकदमा कराची षड़यंत्र केस के नाम से प्रसिद्ध हुआ। 1930 के सत्याग्रह आंदोलन के दौरान विदेशी वस्त्रों का तिरस्कार करने में हमारे समाज के युवाओं श्री टीकमदास भोजराज पुरस्वानी, श्री लधाराम हेमनदास पहलवानी, श्री नन्दीराम रीझूमल रामनानी का भी योगदान रहा, वे घर-घर जाकर विदेशी वस्त्र इक्कठठे करके उनकी होली जलाते रहे व स्वयं भी खादी के वस्त्र ही धारण करते रहे। **मार्च 1931** सरदार वलभभाई पटेल की अध्यक्षता में कांग्रेस का अधिवेशन कराची में हुआ। जिसमें पहली बार **सीमांत गांधी खान अब्दुल गफ्फार खान** भी सम्मिलित हुए जिनसे हमारे युवा भी सम्मिलित हुए और कांग्रेस के बड़े नेताओं से मिलने का अवसर मिला। संयोग से उसी दिन **भगत सिंह, सुखदेव व राज गुरू** को फांसी की सजा मिली।

1932 में गांधीजी का डांडी यात्रा के दौरान हमारे युवाओं ने भी हैदराबाद के पास नमक की झोल में नमक बना कर आंदोलन में सहयोग दिया। **1936** में पं. जवाहर लाल नेहरू के हैदराबाद सिंध आगमन पर 101 किलो **सोने का हाथ से बना चरखा व** मीनाकारी **के एक पैंडल स्मृति चिंह के रूप में पूज खुदाबदी सेवा ऐसोसिएशन** ने भेंट किया। **1942 भारत छोड़ो आंदोलन** के दौरान हमारे युवा सेना ने गिरफ्तारी दे दी और जेल गये। जेल में भी जेलर की "जी हजूरी" से इन्कार करने पर हमारे युवाओं की जजीरों से पिटाई की गई और कोठरी में डाल दिया गया।

भारत-पाक विभाजन के बाद हमारे स्वतंत्रता सेनानीयों श्री गेहीमल बगोमल वसनानी, श्री लधाराम पहिलवानी को आजीवन पेंशन मिलती रही, **26 अप्रेल 1995** को श्री लधाराम पहिलवानी का निधन हो गया जिनका पूरे राजकीय सम्मान के साथ अंतिम संस्कार किया गया जिसमें कांग्रेस के नेता व जयपुर जिलाध्यक्ष सम्मलित हुए।

आजाद हिन्द फौज :

सिंधियों के दिलों में नेताजी सुभाष चन्द्र बोस के लिये अपार स्नेह था, महात्मा गांधी के विरोध के बावजूद **1938** में सिंधियों के पूर्ण सहयोग से अपने प्रतिद्वंदी पिताबी सितारमैया को हरा कर पुनः अध्यक्ष

अध्यक्ष चुने गये। एक बार नेताजी के हैदराबाद आगमन पर स्टेशन पर हमारे श्री टीकमदास भोजराज पुरसवानी ने उन्हें प्रमोद में प्रस्ताव रखा कि आप सिंधी लड़की से विवाह करके, मिले हुए दहेज को देश की आजादी के लिये दे देवें। जवाब में नेताजी ने कहा कि यदि डॉ. चोइथराम गिदवानी शादी करते हैं तो मैं भी तैयार हूं। लेकिन यहां हम सभी कुंवारे खड़े हैं, हमें कुंवारों की एक पार्टी बनानी चाहिये जिसका नाम **जय हिन्द पार्टी** हो और उसका उद्देश्य देश की आजादी के लिये विवाह के आनन्द का त्याग हो और शायद उस समय भी नेताजी के दिल में आजाद हिन्द फौज बनाने का ख्याल आया होगा। वही जय हिन्द का नारा गूंजा था।

4 जुलाई 1943 को आजाद हिन्द फौज का गठन हुआ व नेताजी के इस आहवान पर **तुम मुझे खून दो में तुम्हें आजादी दूंगा** हमारे सोलह जवान जो उस समय विदेशों में कार्यरत थे वो अपना कार्य छोड़ कर आजाद हिन्द फौज में शामिल हुए। हमारे श्री झमटमल सुखुरामदास हजराजानी जो नवविवाहित थे व अपनी मां के इकलौते बेटे थे (उनके पिता का भी इनके बचपन में देहांत हो गया) और श्री वाशदेव पोहूमल हसराजानी जो केवल 15 वर्ष की अल्प आयु के थे, वे उस समय मनीला में कार्यरत थे, वे भी काम छोड़ कर आजाद हिन्द फौज में सम्मलित हो गये। उसके सिवाय श्री सुगनामल लीलाराम गुरबानी, श्री गुनोमल पंजानदास मंघनानी जो उस समय इन्डोनेशिया में थे तथा अन्य हमारे नव युवक जो सिंगापुर, मलेशिया, सैगान व बर्मा में थे, वे भी अपना कार्य छोड़ कर आजाद हिन्द फौज में भर्ती हो गये। ये सभी नव युवक आजाद हिन्द फौज के 71 युवकों के पहले बैच में थे। यह पहला जत्था सिंगापुर पहुंचा। वहीं नेताजी ने 40,000 अंग्रेजों के भारतीय सैनिक, जो कि जापान के पास युद्ध बन्दी थे, उन्हें देश भक्ति के लिये प्रेरित किया व आजाद हिन्द फौज में भर्ती कर लिया। जिसमें हिन्दू, मुस्लिम, सिख व ईसाई समुदाय के सैनिक थे जो आपस में एक दूसरे को जयहिन्द करके संबोधित करते थे।

नये भर्ती फौजियों को कुछ महीने जंगलों में कठिन मिलट्री ट्रेनिंग देकर तैयार किया गया। **21 अक्टूबर 1943** में आजाद हिन्द सरकार की विदेशी भूमि पर घोषणा की और जिसकी अस्थाई राजधानी रंगून को बनाया। **देहली चलो - लाल किले पर तिरंगा फहराना है** के शलोग्न के साथ आजाद हिन्द फौज तेजी के साथ आगे बड़ती गई व कई जंग जीते। **1944** के अंत तक अण्डमान व निकोबार उपखंडो को अंग्रेजों की गुलामी से मुक्त कराकर स्वराज व शहीद नाम दिये। **नेताजी जब जापान में होते थे, युद्ध की गुप्त रूप रेखा हमारे श्री मंघनमल लालचन्द होतवानी के घर पर तैयार करते थे।** आजाद हिन्द फौज जंगलों से गुजरते हुए बर्मा के आराकान, कालादान, इम्फाल और कोहिमा शहरों को जीत कर बर्मा और भारतीय सहरद पर कोक्स-टाउन (COXTOWN) पर कब्जा किया और **18 मार्च 1944** पर पहली बार वहां पर तिरंगा फहराया। भारतीय सैनिकों ने भावुक होकर मातृभूमि की मिट्टी को सिर पर रखा व चूमा व खुशी के आंसु बहाए। नेताजी ने इसकी घोषणा रेडियो से **21 मार्च 1944** को की।

अध्यक्ष चुने गये। एक बार नेताजी के हैदराबाद आगमन पर स्टेशन पर हमारे श्री टीकमदास भीजराज गुरबानी ने उन्हें प्रमोद में प्रस्ताव रखा कि आप सिंधी लड़की से विवाह करके, मिले हुए दहेज को देश की आजादी के लिये दे देवें। जवाब में नेताजी ने कहा कि यदि डॉ. चोइथराम गिदवानी शादी करते हैं तो मैं भी तैयार हूं। लेकिन यहां हम सभी कुंवारे खड़े हैं, हमें कुंवारों की एक पार्टी बनानी चाहिये जिसका नाम **जय हिन्द पार्टी** हो और उसका उद्देश्य देश की आजादी के लिये विवाह के आनन्द का त्याग हो और शायद उस समय भी नेताजी के दिल में आजाद हिन्द फौज बनाने का ख्याल आया होगा। वहीं जय हिन्द का नारा गूंजा था।

4 जुलाई 1943 को आजाद हिन्द फौज का गठन हुआ व नेताजी के इस आह्वान पर **तुम मुझे खून दो मैं तुम्हें आजादी दूंगा** हमारे सोलह जवान जो उस समय विदेशों में कार्यरत थे वो अपना कार्य छोड़ कर आजाद हिन्द फौज में शामिल हुए। हमारे श्री झमटमल सुखुरामदास हजराजानी जो नवविवाहित थे व अपनी मां के इकलौते बेटे थे (उनके पिता का भी इनके बचपन में देहांत हो गया) और श्री वाशदेव पोहूमल हसराजानी जो केवल 15 वर्ष की अल्प आयु के थे, वे उस समय मनीला में कार्यरत थे, वे भी काम छोड़ कर आजाद हिन्द फौज में सम्मलित हो गये। उसके सिवाय श्री सुगनामल लीलाराम गुरबानी, श्री गुनीमल पंजानदास मंघनानी जो उस समय इन्डोनेशिया में थे तथा अन्य हमारे नव युवक जो सिंगापुर, मलेशिया, सैगान व बर्मा में थे, वे भी अपना कार्य छोड़ कर आजाद हिन्द फौज में भर्ती हो गये। ये सभी नव युवक आजाद हिन्द फौज के 71 युवकों के पहले बैच में थे। यह पहला जत्था सिंगापुर पहुंचा। वहीं नेताजी ने 40,000 अंग्रेजों के भारतीय सैनिक, जो कि जापान के पास युद्ध बन्दी थे, उन्हें देश भक्ति के लिये प्रेरित किया व आजाद हिन्द फौज में भर्ती कर लिया। जिसमें हिन्दू, मुस्लिम, सिख व ईसाई समुदाय के सैनिक थे जो आपस में एक दूसरे को जयहिन्द करके संबोधित करते थे।

नये भर्ती फौजियों को कुछ महीने जंगलों में कठिन मिलट्री ट्रेनिंग देकर तैयार किया गया। 21 **अक्टूबर 1943** में आजाद हिन्द सरकार की विदेशी भूमि पर घोषणा की और जिसकी अस्थाई राजधानी रंगून को बनाया। **देहली चलो - लाल किले पर तिरंगा फहराना है** के शलोगन के साथ आजाद हिन्द फौज तेजी के साथ आगे बढ़ती गई व कई जंग जीते। **1944** के अंत तक अण्डमान व निकोबार द्वीपसमूह को अंग्रेजों की गुलामी से मुक्त कराकर स्वराज व शहीद नाम दिये। **नेताजी जब जापान में होते थे, युद्ध की गुप्त रूप रेखा हमारे श्री मंघनमल लालचन्द होतवानी के घर पर तैयार करते थे।** आजाद हिन्द फौज जंगलों से गुजरते हुए बर्मा के आराकान, कालादान, इम्फाल और कोहिमा शहरों को जीत कर बर्मा और भारतीय सरहद पर कोक्स-टाउन (COXTOWN) पर कब्जा किया और **18 मार्च 1944** पर पहली बार वहां पर तिरंगा फहराया। भारतीय सैनिकों ने भावुक होकर मातृभूमि की मिट्टी को सिर पर रखा व चूमा व खुशी के आंसू बहाए। नेताजी ने इसकी घोषणा रंगून में **21 मार्च 1944** को की।

बड़े दुःख की बात है कि जिस समय आजाद हिन्द फौज के सैनिक जीतते हुए आगे बढ़ रहे थे, [illegible] संयुक्त देशो की सेना ने जर्मनी को बुरी तरह पराजित करना शुरू किया और अमेरिका ने 6 और 9 अगस्त 1945 पर जापान के हिरोशिमा व नागाशाकी शहरों पर दो अणु बम फैंके, दोनो देशों ने 12 सितंबर 1945 को आत्मसर्मपण किया और आजाद हिन्द फौज को बारूद व हथियारों की सप्लाई बन्द कर दी। [illegible] आजाद हिन्द के सैनिक बंगाल में ब्रह्मपुत्र नदी को भारत की दिशा की ओर पार कर चुके थे। हथियारों की [illegible] बारूद की कमी के कारण आजाद हिन्द फौज का लड़ना आत्मघात जैसा था। आजाद हिन्द फौज ने एक [illegible] बनाया था **करो या मरो**। नव जवान **श्री झमटमल हसराजानी व श्री वाशदेव हसराजानी** [illegible] (आसाम/मणीपुर) में लड़ते हुए अमर शहीद हुए। हमारे समाज को इन दो शहीदों पर बड़ा [illegible] **18 अगस्त 1945** को नेताजी सुभाष चन्द्र बोस का हवाई दुर्घटना में मरने की अफवाहें समूचे विश्व में फैल [illegible] कई आजाद हिन्द फौज के सैनिक युद्ध बन्दी बन गये व कई सैनिक भूमिगत हो गये, हमारे समाज के [illegible] चौदह नव जवान आजादी के करीब पांच - छ बरस बाद भूमिगत से प्रकट हुए और भारत सरकार की ओर [illegible] उन्हें आजीवन पेंशन दी गई।

समाज सेवा

- विभाजन के पूर्व सेशन कोर्ट हैदराबाद में पांच सदस्यों की जूरी थी उसके दो सदस्य हमारे समाज के [illegible] जिनके नाम गोपालदास होतवानी व लालचन्द पुरसवानी थे।
- 1942 में स्व. श्री वाटूमल झामनदास पुरसवानी काठियावाड़ स्पोर्ट क्लब, नैरोबी (केन्या- ईस्ट अफ्रीका) के अध्यक्ष एवं किक्रेट टीम के कप्तान चुने गए थे।
- 1945 में श्री वस्यामल चांडवानी को घाना में केप कोस्ट का चीफ (माननीय उपाधि) बनाया गया था।
- 1960 व 70 के दशक में श्री नेणूमल पहिलाजराय हिंगोरानी और श्री हासाराम सोभराज [illegible] थाईलैंड में रोटरी क्लब बैंगकाक के अध्यक्ष बनाए गये तथा अन्य उपाधियों से सुशोभित हुए।
- 1974 में स्व. श्री गुलाबराय लधाराम केसवानी नाईजेरिया में लैगोस के चीफ (माननीय उपाधि) [illegible] गये थे।
- 21 जुलाई 1985 को खुदाबादी सोनारा नवजवान मंडल समिति ने स्वर्ण जयंती श्री जीवतराम [illegible] वसनानी की अध्यक्षता में धूमधाम से मनाई।
- 8 फरवरी 2003 को खुदाबादी सोनारा सिंधवर्क सोसाइटी ने स्वर्ण जयंती श्री गंगाराम [illegible] पुरसवानी को अध्यक्षता में धूमधाम से मनाई।
- 4-8 नवम्बर, 2005 को पूज्य खुदाबादी सोनारा पंचायत ने हीरक जयंती श्री गंगाराम [illegible] पुरसवानी की अध्यक्षता में धूमधाम से मनाई।

ख. श्री ठाकुरदास तीर्थदास हिंगोरानी ने निम्न पदों पर रहकर समाज की सेवा कीः-

अध्यक्षः हैदराबाद सोनारा एसोसिएशन (1941) जिसमें सभी जाति और धर्मों के सुनार सदस्य थे।

तीर्थदः हैदराबाद म्यूनिसिपल कॉउसिल (1944)

अध्यक्षः सोनारा गोल्ड-सिल्वर कम्पनी-शेयरस् जारी किये (1944)

अध्यक्षः नासिक तहसील सिन्धी समाज (1949)

अध्यक्षः देवली सिन्धी समाज (1950)

अध्यक्षः सिन्धी कॉपरेटिव हॉउसिंग सोसाइटी, सिन्धी कॉलोनी, बनी पार्क, जयपुर (1959)

अध्यक्षः बोर्ड, सिन्धी मिडिल स्कूल, सिन्धी कॉलोनी, बनी पार्क, जयपुर (1966)

अध्यक्षः खुदाबादी सोनारा एसोसिएशन, सिन्धी कॉलोनी, बनी पार्क, जयपुर (1958)

चेयरमैनः खुदाबादी सोनारा एसोसिएशन ट्रस्ट, जयपुर (1965)

अध्यक्षः पूज्य खुदाबादी सोनारा पंचायत, जयपुर (1953-55, 57-61, 69-71)

श्री जमनो पोकरदास वसनानी ने निम्न पदों पर रहकर समाज की सेवा कीः-

अध्यक्षः लायन्स् क्लब जयपुर सेन्ट्रल (1994-95)

अध्यक्षः ऑल इंडिया सिंधु कल्चर सोसाइटी, जयपुर (2002-04)

लाईफ पैट्रनः श्रीराम वृद्ध आश्रम समिति, चाकसू

चेयरमैनः खुदाबादी सोनारा एसोसिएशन ट्रस्ट (2004-07) व मानद लाईफ ट्रस्टी।

Gangaram Shamdas Purswani - Community & Social Contributions

He served the Sindhi Community of Jaipur (India) as under:

Chairman: Khudabadi Sonara Association Trust, Jaipur for 2001- 04, 2019-22 and Hon'ry Trustee for Life

President: Khudabadi Sonara Sindhwork Society (R), Jaipur for 2001-07.

President: Puj Khudabadi Sonara Panchayat (R), Jaipur for 2003-07, 2022 onward.

Patron: Cheti Chand Sindhi Mela Samiti Maha Nagar Jaipur for 2003-04.,5.

V. President: Cheti Chand Sindhi Mela Samiti Maha Nagar Jaipur for 2005-06, 2006-07

V. President: Puj Sindhi Panchayat, Sindhi Colony, Bani Park, Jaipur for 2003-05.

V. President: Puj Panchayat Sindhi Colony, Bani Park, Jaipur for 2004-10.

Advisor: Puj Sindhi Central Panchayat Jaipur Maha Nagar for 2019-onward

He served the community by occupying following club positions:

President: Rotary Club Jaipur Mansarovar for 2004-2005.

Chairman: Rotary Club Jaipur Mansarovar Trust for 2005-2006.

V. Chairman: Int. Rotary Youth Leadership Award Committee, RID 3050 for 2003-04

Even living in Panama, he always attended the Club Rotario Cristobal-Col

The club awarded and decorated him with its Pin for his contribution towards